# बाबू जगजीवन राम की समृति में जन्मशती *समारोह* में भारत की *महामान्या* राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटील का भाषण

**संसद भवन, नई दिल्ली, 5 अप्रैल, 2008**

देवियो और सज्जनो,

बाबू जगजीवन राम की समृति में आयोजित जन्मशती समारोह में भाषण देते हुए मुझे गर्व हो रहा है । बाबूजी, जिस नाम से वे लोकप्रिय थे, उनके जन्म के सौ वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में समारोह का आयोजन हमारे देश के सबसे महान नेताओं में से एक को दी जाने वाली सर्वाधिक उपयुक्त श्रद्धांजलि है ।

बाबू जगजीवन राम ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में और स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्र निर्माण में बहुत अधिक योगदान दिया । एक राष्ट्रीय नेता और सांसद के रूप में उनकी सशक्त उपस्थिति थी और उन्होंने भारत के राजनैतिक और संवैधानिक विकास को स्वरूप देने में और सामाजिक परिवर्तन लाने में भी पांच दशक से अधिक समय तक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । कार्य के प्रति उनका समर्पण, मानवीय गरिमा में उनकी आस्था और किसी भी व्यक्ति के प्रति दुर्भाव नहीं रखने और सभी के प्रति दया भाव रखने संबंधी उनके दर्शन के कारण वे अनुपम व्यक्तित्व बन गए ।

उनका जीवन हम लोगों के लिए सबक है कि व्यक्ति कैसे सफल हो सकता है और कठिन परिस्थितियों, अड़चनों और चुनौतियों के बावजूद समाज और देश के प्रति सकारात्मक योगदान दे सकता है । सन् 1908 में अत्यंत दलित परिवार में जन्म लेने के बाद अल्पायु में ही उनके ऊपर से पिता का साया हट गया ।

अबोध जगजीवन राम के पालन पोषण की जिम्मेवारी उनकी माता की थी जिन्होंने अपने अथक प्रयासों से यह सुनिश्चित किया कि बाबू जगजीवन राम अपनी पढ़ाई को जारी रखते हुए इसे पुरा कर सके । यह शिक्षा ही थी जिससे बाबू जगजीवन राम को राष्ट्र और समाज की सेवा करने की क्षमता प्राप्त हुई । अब भी लोगों का जीवन सुधारने के लिए और समाज में उपेक्षित वर्गों की अधिकारिता के लिए शिक्षा एक आधार और मूलभूत आवश्यकता है । सरकार समाज और परिवारों का यह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों की शिक्षा प्राप्ति को सुनिश्चित करे ।

जगजीवन राम की माँ जिन्होंने सामाजिक और आर्थिक कठिनाईयों के बावजूद यह सुनिश्चित किया कि उनके बच्चे को शिक्षा मिले, उनकी ही तरह मैं सभी माता-पिता से आह्वान करती हूँ कि वे सुनिश्चित करें कि उनके बच्चे, बालक, बालिका दोनों स्कूल जाएं ।

सभी के लिए प्राथमिक़ शिक्षा हमारी दृढ़ प्रतिबद्धता और दायित्व है । दलित और उपेक्षित पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों के लिए हमें विशेष प्रयास करना है बहुत से ऐसे होनहार लड़के और लड़कियां है जिनमें समाज के लिए कुछ करने की छिपी हुई प्रतिभा और भावना है । तथपि उनकी क्षमता की पहचान की जानी चाहिए और राष्ट्र निर्माण के प्रयोजनार्थ इसे एक दिशा प्रदान की जाना चाहिए ।

विभिन्न क्षेत्रों के सामाजिक नेताओं को आगे आकर ऐसे छात्र, छात्राओं को संरक्षण प्रदान करना चाहिए ताकि बाबू जगजीवन राम के जीवन की ही तरह युवकों की आरंभिक प्रतिभा, आशावाद और आदर्श को मुखरित होने का पर्याप्त अवसर मिल सके । इस संदर्भ में यह उल्लेख करना महत्वपूर्ण है कि समाज के कमजोर और उपेक्षित वर्गों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के निमित्त शिक्षा योजनाओं को लागू किया जाए और इनकी उचित निगरानी हो । इसके अलावा ऐसे परिवारों से आने वाले बच्चों को सुविधाएं दी जानी चाहिए जिससे उन्हें समाज के अन्य वर्गों के समकक्ष आने में मदद मिलेगी । छात्रावास सुविधा, पौष्टिक आहार और अतिरिक्त कोचिंग क्लास ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है । मुझे जानकारी मिली है कि बाबू जगजीवन राम छात्रावास योजना इस वर्ष शुरू की गई है जिसके अंतर्गत छात्रावास का निर्माण किया जाएगा । यह योजना बाबूजी के प्रति एक बड़ी श्रद्धांजलि है जो जीवन भर शिक्षा के क्षेत्र में प्रयासरत रहे । यह भी हर्ष की बात है कि उनकी पुत्री और सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री श्रीमती मीरा कुमार के ऊपर इस योजना के कार्यान्वयन का दायित्व है। निश्चित तौर पर एक उज्ज्वल भारत और अपने पिता के दर्शन का लक्ष्य इस योजना को प्रभावी रूप से लागू करने में सशक्त प्रेरणा स्रोत होगा ।

बाबू जगजीवन राम द्वारा निर्धारित मानक और उनके आदर्श अनुकरणीय हैं। वे सभी व्यक्ति जो उनके सम्पर्क में आए, उन्होंने उनकी बौद्धिक क्षमता, स्पष्ट विचार और संगठनात्मक कौशल की सराहना की । पं. मदन मोहन मालवीय युवा जगजीवन राम से इतना अधिक प्रभावित हुए कि जब वे 1925 में उनसे आरा में मिले तो उन्होंने जगजीवन राम को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए आमंत्रित किया। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस 1928 में उनसे कलकत्ता में मिले जब उन्होंने मजदूर रैली का आयोजन किया था जिसमें लगभग 50000 लोगों ने भाग लिया । इसी प्रकार 1934 में बिहार में आए भूकंप के बाद एक राहत शिविर स्थापित करने पर गाँधी जी ने भी उनके कार्य की सराहना की ।

1937 में बाबूजी दलित वर्ग लीग के प्रत्याशी के रूप में बिहार विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए । सरकार बनाने के लिए अंग्रेजों ने उन्हें ढ़ेर सारा धन और मंत्री पद की पेशकश कर उनका समर्थन मांगा किन्तु बाबूजी ने अंग्रेजों की पेशकश को अस्वीकार करते हुए स्वतंत्रता सैनानियों के साथ जाना पसंद किया । भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नेता इस तरह की देशभक्ति से प्रभावित हुए और गांधी जी ने कहा कि जगजीवन राम कठिन परीक्षा में शुद्ध सोने की तरह उभरे हैं। उसके बाद के कार्यों में भारत की आजादी और समाज सुधार के लिए